एस. पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

गुरुकुल सन्देश

विद्यालय का मासिक मुखपत्र....

अंक- 83 www.gurukulkhurai.in माह-जून+जुलाई, 2026

सम्पादकीय-

हम विद्यार्थियों के लिये नया अनुभव

भव्या श्रीवास्तव

हम सभी कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों को विद्यालय की मासिक पत्रिका 'गुरुकुल-संदेश' का वर्तमान सत्र के जुलाई माह का अंक प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस माह पत्रिका का दायित्व पहली बार कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों को सौंपा गया। यह विद्यार्थियों के लिए एक नया अनुभव था; जिसने विद्यार्थियों को जिम्मेदारी, अनुशासन, टीम वर्क और रचनात्मकता का महत्व सिखाया।

पत्रिका के लिए सामग्री एकत्रित करना, उसे सुव्यवस्थित करना तथा सभी विद्यार्थियों की रचनाओं का संकलन करना हमारे लिए चुनौती पूर्ण होने के साथ-साथ अत्यंत रोचक भी रहा। जुलाई माह में आयोजित विभिन्न सह-शैक्षणिक, सांस्कृतिक-साहित्यिक गतिविधियों पर विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ समाचार संकलन का कार्य किया। साथ ही अनेक विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित रचनाएं देकर इस पत्रिका को और समृद्ध बनाया। सभी विद्यार्थियों का उत्साह, सहयोग और समर्पण इस अंक की सबसे बड़ी ताकत है।

इस पूरे कार्य में हमारे आदरणीय शिक्षकों का मार्गदर्शन प्रत्येक कदम पर हमारे साथ रहा। उनके अमूल्य सुझाव, निरंतर प्रोत्साहन और सतत सहयोग के बिना इस पत्रिका का प्रकाशन संभव नहीं था। उन्होंने हमें केवल कार्य करना ही नहीं अपितु उसे पूर्ण निष्ठा, जिम्मेदारी और समर्पण के साथ संपन्न करना भी सिखाया।

इस पत्रिका को तैयार करने की पूरी प्रक्रिया में हम सभी विद्यार्थियों का अनुभव अत्यंत अद्भुत और सीखने से भरपूर रहा। जब हम सब ने मिलकर कक्षा के अलग-अलग वर्गों और विषयों से जुड़ी सामग्री को जुटाने का काम किया तो हमें एक टीम के रूप में काम करने की असली ताकत समझ आई। एक दूसरे के विचारों का सम्मान करना आपसी चर्चा से आने वाली बाधाओं को दूर करना और हर छोटी-बड़ी जिम्मेदारी को मिलजुल कर निभाना हमारे लिए किसी कक्षा की चार दीवारी से बाहर की एक बहुत बड़ी सीख थी।

जहां तक हमारे आदरणीय शिक्षकों के मार्गदर्शन की बात है तो उन्होंने हर कदम पर हमारा हाथ थामे रखा। जब कभी हमें यह समझ नहीं आता था कि किसी लेख को कैसे संपादित किया जाए या पत्रिका के प्रारूप को आकर्षक कैसे बनाया जाए...? तब हमारे गुरुजनों ने हमें केवल निर्देशित ही नहीं किया अपितु हमें खुद सोचने और सही निर्णय लेने के लिए भी प्रेरित किया। हम अपने सभी पाठकों, विद्यालय परिवार तथा शिक्षकों का हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं, जिनके स्नेह, सहयोग और प्रेरणा के बिना यह प्रयास संभव नहीं था। हमें पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल संदेश का यह अंक आपको ज्ञान, प्रेरणा और आनंद प्रदान करेगा।

अभिव्यक्ति-

नवाचार का उदाहरण यह अंक

प्रयंक जैन (प्राचार्य)

विगत सत्र मासिक पत्रिका को और अधिक प्रभावी एवं विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ाने के उद्देश्य से विद्यालय के मुखपत्र में कुछ परिवर्तन किया गया। जिसके परिणामस्वरुप पूर्व सत्र के अंतिम माहों में कक्षा बारहवीं एवं ग्यारहवीं के विद्यार्थियों द्वारा इस मासिक पत्रिका का सम्पादन किया गया; जिसमें छात्रों द्वारा ही विषयवस्तु एकत्रित करना, लिखना, संकलन, समाचार लेख आदि सम्मिलित था।

वर्तमान सत्र के प्रथम माह में जिम्मेदारी कक्षा दसवीं के छात्र-छात्राओं पर थीं; मन में एक डर भी था कि इस दायित्व का बोझ ये नन्हें कंधे उठा पायेंगे कि नहीं? परन्तु विश्वास किया, जिम्मेदारी सुनिश्चित की गई और परिणाम हम सभी के सामने हैं। निःसंदेश इन विद्यार्थियों ने यह साबित कर दिया कि हम अध्ययन के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी पीछे नहीं हैं। इस पत्रिका में जिनका जो सहयोग रहा है उसे उनके नाम से प्रकाशित किया गया है।

गुरुकुल हमेशा विद्यार्थियों को प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने का अवसर देता है ताकि हमारे विद्यार्थी प्रत्येक विधा में अग्रणीय रहें। विद्यार्थियों के पास सामर्थ्य भी है कि वे बहुत कुछ कर सकते हैं; केवल उन्हें दिशा देने की आवश्यकता है; यह पत्रिका, गुरुपूर्णिमा कार्यक्रम की रुपरेखा इसका जीवंत उदाहरण है।

समस्त पालकों से भी विनम्र अनुरोध है कि अपने पाल्यों के अंदर छुपे हुये हुनर को दबाने के बजाय उन्हें उजागर करने का अवसर दीजिये; निश्चित ही वे आपका नाम रोशन करेंगे। विद्यार्थी जीवन में कार्य करने की क्षमतायें असीम हैं; इस पत्रिका के समान आगामी समय में भी इसी प्रकार आपके सहयोग से विद्यालय कार्य करता रहेगा और नवाचार प्रस्तुत करता रहेगा।

माह जून एवं जुलाई में सम्पन्न सभी सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेल, पटल सज्जा आदि प्रतियोगिताओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर श्रेष्ठ दल के रूप में विवेकानन्द दल रहा।

जून-जुलाई 2026 की प्रमुख घटनाएँ एवं उपलब्धियाँ...

संकलन-कु. आस्था जैन (शिक्षिका)

अंतर्राष्ट्रीय

1. फीफा विश्व कप 11 जून 2026 से अमेरिका, कनाडा और मेक्सिको की संयुक्त मेजबानी में 48 टीमों वाला सबसे बड़ा फीफा (FIFA) विश्व कप 2026 शुरू हुआ।
2. फ्रांस में आयोजित G7 शिखर सम्मेलन 2026 में सदस्य देशों ने वैश्विक आर्थिक स्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन तथा यूक्रेन संकट पर साझा रणनीति बनाने पर जोर दिया।

राष्ट्रीय

1. स्वदेशी हाइड्रोजन ट्रेन भारत ने हरियाणा के जींद-सोनीपत रेल खंड पर अपनी पहली स्वदेशी हाइड्रोजन फ्यूल ट्रेन नमो ग्राम रेल का शुभारंभ किया।
2. पहला निजी ऑर्बिटल रॉकेट हैदराबाद स्थित स्काईरूट एयरोस्पेस (Skyroot Aerospace) ने मिशन आगमन के तहत भारत के पहले निजी ऑर्बिटल रॉकेट विक्रम-1 का श्रीहरिकोटा से सफल परीक्षण किया। इसके साथ ही भारत निजी अंतरिक्ष उद्योग में यह मुकाम हासिल करने वाला विश्व का तीसरा देश बन गया है।
3. सोनम वांगचुक ने जुलाई-2026 में शिक्षा सुधार और परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता की माँग को लेकर आमरण अनशन किया तथा संसद चलो आंदोलन के माध्यम् से विरोध-प्रदर्शन किया।

प्रादेशिक (मध्य प्रदेश)

1. केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना के विरोध मे बुंदेलखंड के छतरपुर और पन्ना में आदिवासी महिलाओं का चिता आंदोलन जारी है।
2. मध्यप्रदेश विधानसभा में समान नागरिक संहिता (UCC) विधेयक 2026 प्रस्तुत किया गया।
3. माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्ष 2027 को 'युवा वर्ष' के रूप में मनाए जाने की घोषणा की।

क्या आप जानते हैं ?

1. सूर्य का प्रकाश :- सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक पहुँचने में लगभग 8 मिनट 20 सेकंड का समय लेता है।
2. डाक व्यवस्था :- भारत में विश्व की सबसे बड़ी डाक व्यवस्था है।
3. मानव हृदय प्रतिदिन लगभग 1 लाख बार धड़कता है।
4. अंतरिक्ष में जाने वाला पहला जीव लाइका (Laika) नाम की एक कुतिया थी।
5. भारत का संविधान दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान है।
6. शून्य (0) के आविष्कार का श्रेय मुख्य रूप से महान भारतीय गणितज्ञ आर्यभट्ट को दिया जाता है। हालाँकि, शून्य के साथ गणना (Calculation) करने का नियम सबसे पहले भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने परिभाषित किए थे।

When someone asks me, "What did your mother teach you?"

I smile with pride and say…
She didn't just raise meshe built my character.
She gave me the strength of self-respect
And filled every part of me with honesty.
She taught me to value humanity over money,
To live simply,
And to never bow at the wrong places.
Every value I carry today
Is a reflection of her teachings.
I'm grateful she was strict
Because in a life full of challenges,
She prepared me to keep moving forward, no matter what.
And honestly, that is more than enough…
Because money may bend the world,
But the courage to stand tall in a crowd
Comes only from within
From self-respect.

-Mrs. Manisha Kukrele (English Department)

Fear of English

Hello students,

I want to talk about something that every one of us feels Fear of English. Fear is not our enemy. It is a natural emotion that protects us from danger. But sometimes, fear stops us from trying new things.

"Courage does not mean having no fear even courage means victory over fear."

Students feel afraid when they hear the word "English". They worry about making mistakes, speaking with the wrong pronunciation or being laughed by others. We should remember that English is just a language, not a measure of intelligence. Making mistakes is a natural part of learning. To overcome English fear (phobia) we should read simple books, listen to English songs and stories, watch educational videos and try speaking English every day. We should not be afraid of making mistakes.

English is an important global language that helps us communicate with people around the world. It opens door to better education, career opportunities and knowledge. Instead of fearing English, we should see it as a friend that helps us to grow.

Let's replace fear with confidence, hesitation with practice and doubt with determination.

-Mrs. Manisha Kukrele

गुरुकुल के विद्यार्थियों में शिक्षकों की भूमिका
-संस्कार यादव, दसवीं (स)

शिक्षक हमारे जीवन की वह नींव हैं जिस पर हम टिके हुए हैं और हम कुछ शब्दों में शिक्षक की भूमिका बताना चाहते हैं।
शिक्षक हमें खेलकूद सिखाते हैं और आगे तक पहुँचाते हैं, ऐसे शिक्षक कहलाते हैं और हम उन्हें ही भूल जाते हैं।
जो हर चीज का ज्ञान करवाते हैं और मंजिल तक पहुँचाते हैं, ऐसे शिक्षक कहलाते हैं, फिर हम उन्हें क्यों भूल जाते हैं ?
विद्यार्थियों को कक्षा में अच्छी शिक्षा देते हैं और श्रेष्ठ परिणाम तक पहुँचाते हैं, ऐसे शिक्षक कहलाते हैं।
सत्य का मार्ग दिखाकर विद्यार्थियों को श्रेष्ठ बनाते हैं, वे शिक्षक कहलाते हैं।
गुरुकुल का जो प्राचार्य पद निभाते हैं और बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हर चीज उपलब्ध करवाते हैं, वे श्री प्रयंक जैन सर कहलाते हैं।
फिर सबसे पहले कक्षा में श्री संतोष पुरोहित सर आते हैं, हमें कक्षा नायक बनाते हैं और सामाजिक विज्ञान का ज्ञान कराते हैं।
ऐसे ही फिर सबके चहेते श्रीमान एच. के. अग्निहोत्री जी सर आते हैं और गानों के माध्यम से पूरी हिंदी बिना लिखे ही याद कराते हैं।
फिर हम लंच करने जाते हैं, उसके बाद श्रीमान संतोष चौबे जी आते हैं और वे ऐसा पढ़ाते हैं कि पूरे प्रश्न बोर्ड परीक्षा में फँस जाते हैं।
फिर श्री सिद्धांत जैन सर आते हैं, हम सबको कड़ी कठोरता से संस्कृत याद कराते हैं।
फिर हम पानी पीने जाते हैं, इतने में सुश्री अमिता जैन मेम आती हैं और विज्ञान का ज्ञान कराती हैं।
उनके बाद श्रीमती मनीषा कुकरेले मेम आती हैं और अच्छे उदाहरणों के माध्यम से अंग्रेजी समझाती हैं।
और कंप्यूटर में पेंटिंग से लेकर जो पूरा ज्ञान कराते हैं, वे श्री अमित नेमा जी सर कहलाते हैं।
और क्रिकेट में अपना प्रतिनिधित्व निभाते हैं और बच्चों को सिखलाते हैं, ऐसे श्री देवेंद्र जैन सर कहलाते हैं।
पेड़-पौधों को लगाना सिखलाते, वे पर्यावरण स्वच्छ बनाना सिखलाते हैं, ऐसे श्री अकील खान सर कहलाते हैं।
नौवीं कक्षा में सामाजिक विज्ञान पढ़ाती हैं और मानचित्र बनाना सिखाती हैं, ऐसी सुश्री आस्था जैन मेम कहलाती हैं।
कक्षा में हम खूब शोर मचाते हैं और वे खूब डाँट लगाते हैं, फिर प्यार से मनाते हैं, ऐसे शिक्षक कहलाते हैं।
हमारे शिक्षकों ने जो हमें सिखलाया, उसे हम दृढ़ संकल्पित होकर निभाएँगे।
ऐसे शिक्षकों को हम कभी ना भूल पाएँगे, कभी ना भूल पाएँगे।
धन्यवाद....

मेरा विद्यालय
-अर्हम जैन, दसवीं (द)

मेरा विद्यालय शहर के एक साफ-सुथरे स्थान पर स्थित है। यह केवल ईंट-पत्थरों की इमारत नहीं है, बल्कि प्यार और संस्कारों से भरपूर है। मेरे विद्यालय की इमारत बहुत बड़ी और सुंदर है। सन् 1944 में इस विद्यालय की शुरुआत मात्र 5 विद्यार्थियों के साथ की गई थी और आज यह पूरे शहर और आस-पास के गाँवों के विद्यार्थियों को अपनी बेहतरीन सेवाएँ दे रहा है।

हमारे शिक्षक हमें बहुत प्रेम और लगन से पढ़ाते हैं। यहाँ जितना सम्मान शिक्षकों को मिलता है, उतना ही विद्यार्थियों को भी मिलता है। यहाँ पुस्तकालय (Library) और प्रयोगशाला (Laboratory) के साथ-साथ हर खेल का मैदान भी है। विद्यालय में समय-समय पर खेल प्रतियोगिताएँ और विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते रहते हैं।

विद्यालय में लगभग 23000 विद्यार्थी अध्ययनरत रह चुके हैं। हमारे विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ अच्छे संस्कार देकर श्रेष्ठ विद्यार्थी बनाने का संकल्प पूर्ण होता है। हमारे विद्यालय की हर कक्षा में स्मार्ट बोर्ड की उपलब्धता है और सुरक्षा के लिए विद्यालय में हर जगह कैमरे लगे हुए हैं। विद्यालय मेरे जीवन का सबसे प्यारा स्थान रहा है।

माँ
-भूमि दांगी
दसवीं (स)

भगवान की अनोखी देन है माँ,
मेरे जीवन का अनमोल रतन है माँ।

सूर्य के उगने से सुबह होती है,
लेकिन तुम्हारी सूरत देखने पर मेरी सुबह होती है।

समुद्र से भी गहरी करुणा है तुझमें,
चट्टानों के समान हिम्मत है तुझमें।
बादलों से भी कोमल हृदय है तुम्हारा।

दुःख में होने पर मुँह से माँ निकलता है,
लेकिन मेरे बोलने से पहले ही तू सुन लेती है माँ।
तुम्हारे चरणों में स्वर्ग है,
तुम्हारे पवित्र चरणों में मेरा नमन है।

शिक्षक ने हमें क्या दिया..... ! एक शिक्षक की सीख
-मधुर जैन, दसवीं (ब)

शिक्षक पढ़ना-लिखना भी सिखाते हैं
गाना गाना भी सिखाते हैं
आंखों में आंसू आने पर वही हमें मानते हैं लेकिन
अच्छी परसेंटेज बन जाने पर हम घमंड में आ जाते हैं......

चेस खेलना भी सिखाते, क्रिकेट भी सिखाते हैं
फुटबॉल से लेकर वॉलीबॉल तक सिखाते हैं
खो -खो सिखाते, कबड्डी सिखाते
लेकिन बाहर खेल आने पर हम अपना श्रेय बताते ....

डांस सिखाते, नाटक सिखाते और हमें मंच पर पहुंचाते
भाषण, वाद-विवाद जैसे साहित्यिक कार्यक्रम करवाते
पर उनके लिए हम दो शब्द नहीं कह पाते .....

अनुशासन सिखाते, संस्कार सिखाते
कक्षा में मन ना लगने पर हमें मस्ती भी करवाते
कहानी सुनाते, अच्छी बातें भी करते
फिर भी हम उनके लिए दो शब्द भी नहीं कह पाए..... ! !

सुविचार
-अर्हम जैन, दसवीं (द)

पानी और वाणी,
दोनों में छवि नजर आती है।
पानी स्वच्छ हो तो चित्र नजर आता है,
और वाणी मधुर हो तो
चरित्र नजर आता है।

शिक्षा

विभा कुर्मी, दसवीं (द)

माता देती है नवजीवन,
पिता सुरक्षा देते हैं।
लेकिन सच्ची मानवता
शिक्षक ही जीवन में भरते हैं।

सत्य-न्याय के पथ पर चलना
शिक्षा हमें सिखाती है।
जीवन-संघर्षों से लड़ना
शिक्षा हमें बताती है।

ज्ञानदीप की ज्योति जलाकर
मन को आलोकित करती हैं।
शिक्षा ईश्वर से भी बढ़कर
यही कबीर बताते हैं।

शिक्षा ही है जो बच्चों को
मंजिल तक पहुंचाती है।
शिक्षा को प्रणाम करो
शिक्षा का करो सम्मान.... ! !

खिलाड़ी वही कहलाते हैं

-रोशनी रजक, दसवीं (ब)

सबका कहना सुनकर
जरा देर रुक जाते हैं,
खून पसीना एक करके
अपनी चमक दिखाते हैं,
गिरकर भी वह उठते
चोट खाकर भी मुस्कुराते हैं,
हार हो या जीत हो
दिल से वे मुस्कुराते हैं,
आ जाए बात आत्मसम्मान पर
तो जीतकर ही दिखलाते हैं,
खिलाड़ी का धर्म निभाते हैं,
खेल भावना अपनाते हैं,
और कोई नहीं........
हमारे खिलाड़ी वही कहलाते हैं,
खिलाड़ी वही कहलाते हैं... !

और मैं अनजान हूँ...

शहर में सहर (सुबह)हुई, रोशनी बिखर गई,
मुट्ठी में भरी थी जो रेत, वह न जाने कब बिखर गई,
और मैं अनजान हूँ...

अनकही सी जो हुई बातें, बनती रहीं मन में गाँठें,
छुपी, सहेजी-समेटी उम्मीदें, न जाने कब बिखर गईं,
और मैं अनजान हूँ...

एक मोड़ पर तेरा मन, धागों में उलझा परिंदों सा,
पलकों में सजा ख्वाब, न जाने किस पहर पर है,
और मैं अनजान हूँ...

चलचित्र देख रहीं आँखें, छूती हैं मेरे अंतर्मन को,
हृदय का महसूस शोर, न जाने क्यों मौन पर है,
और मैं अनजान हूँ...

राहों में बिछे सायों की आहट, पाँव तले रुकते कदम,
खामोश लम्हों का यह आलम, न जाने कब गुजरेगा,
और मैं अनजान हूँ...

-दिव्यांश जैन, 10वीं (स)

सीख

-अनन्या दांगी, दसवीं (अ)

कदम कदम चलाकर पहाड़ चढ़ना सिखा दिया,
जब आई मुश्किलें तो डंटकर लड़ना सिखा दिया,
जब गलती की तो डांटा भी और आंसू आए तो समझाया भी,
सिर्फ किताबें ही नहीं आपने दूसरों को पढ़ना भी सिखा दिया,
सिखा दिया कि घबराना नहीं प्रश्न पूछने में शर्माना नहीं,
यह जिंदगी है; संघर्ष कई हैं; हमें कमजोर बनना नहीं हैं,
और मुश्किलों से घबराना नहीं,
आपकी दुआएं और सिर पर हाथ चाहती हूं...
ज्यादा कुछ नहीं बस आपका आशीर्वाद चाहती हूं।

मेरी उड़ान मेरी पहचान

मैं कोई नाजुक कली नहीं, मैं ज्ञान की एक ज्वाला हूं
अपने सपनों के आसमान में हौसले से उड़ने वाली बाला हूं।
श्रृंगार मेरी यह किताबें हैं और कलम ही मेरा गहना है।
मुश्किलों से हार मान लो यह मेरी फितरत में कहां रहना है
मैंने सीखा है अक्षरों से कैसे अपनी तकदीर बनाते हैं
जो रातों की नींद त्यागते है वही इतिहास रचते हैं
लोग कहते हैं कि मंजिल इतनी आसानी से नहीं मिलती
पर बिना पसीना बहाए भी तो सफलता की कलियां नहीं खिलती
शिक्षा ही एक रोशनी है जो जीवन का हर अंधकार मिटाएगी
मेरी खामोशी-सी ये मेहनत एक दिन पूरी दुनिया को जगाएगी
मां-पिता के उस विश्वास को मुझे अपनी ताकत बनाना है
एक बेटी पढ़ लिखकर क्या कर सकती है
यह मुझे आसमान को दिखाना है

-सुहाना कुर्मी, दसवीं (द)

जंतर-मंतर प्रोटेस्ट

-मुस्कान कुर्मी (10वीं-द)

जंतर-मंतर प्रोटेस्ट का मुख्य कारण नीट (NEET) परीक्षा में धांधली, पेपर लीक और छात्रों की मौत पर जवाबदेही तय करना था। इस आंदोलन की शुरुआत 20 जून को हुई।

दिल्ली के जंतर-मंतर पर हजारों छात्रों और समर्थकों का धरना-प्रदर्शन शुरू हुआ था, जिसमें पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक और CJP (सिटिजन्स फॉर जस्टिस एंड पीस) के संस्थापक अभिजीत दीपके भी शामिल हुए। प्रदर्शनकारियों ने 20 जुलाई को संसद की तरफ मार्च किया, जिसके दौरान पुलिस के साथ उनकी तीखी झड़प हुई और लाठीचार्ज किया गया।

22 जुलाई को जंतर-मंतर पर दोबारा भारी हंगामा हुआ और बैरिकेड्स तोड़े जाने की खबरें आईं। 22 जुलाई की रात आँसू गैस के गोले छोड़े गए। प्रशासन ने एहतियात के तौर पर आसपास के इलाकों में इंटरनेट और फूड डिलीवरी सेवाओं पर भी अस्थायी रूप से रोक लगा दी थी।

सरकार और आंदोलनकारियों के बीच कई दौर की बैठकों के बाद आखिरकार यह गतिरोध खत्म हुआ। 25 जुलाई को शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान और CJP प्रतिनिधियों ने एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में आंदोलन समाप्त करने की घोषणा की। यह आंदोलन आधिकारिक रूप से खत्म हो गया है क्योंकि सरकार ने इस्तीफे, प्रदर्शनकारियों पर दर्ज सभी केस वापस लेने और पीड़ित परिवारों को 1 करोड़ रुपये का मुआवजा देने की माँगें मान ली हैं।

मंजिलें लाख कठिन हों मगर, राह पर डटे रहना,
आएगी एक दिन सफलता, यह दिल से कहते रहना।
अँधेरों को चीरकर जो सुबह की राह दिखाता है,
सफलता की आशा रखने वाला ही इतिहास बनाता है।

-कीर्ति प्रजापति, दसवीं (स)

माता-पिता और गुरु का स्थान

-अंबिका दांगी, दसवीं (अ)

गुरुओं से बड़ा कोई ज्ञानी नहीं होता
माँ से बड़ा कोई त्यागी नहीं होता
गिरकर उठना माँ सिखाती है
और गुरु उठकर चलना सीखते

एक बच्चे के जीवन में
दो लोगों का महत्व अधिक होता
एक माता-पिता और दूसरे गुरु का
दोनों ही हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है

माता-पिता इस धरती पर लाते हैं
तो गुरु जीवन जीने की कला सिखाते हैं

एक संस्कार देकर इंसान बनाते
तो दूसरा ज्ञान देकर पहचान दिलाते

सच्चा सुख और ज्ञान इन्हीं के साए में मिलता
तभी तो एक अबोध बालक श्रेष्ठ इंसान बनता

माता-पिता जो संस्कार सिखाते
तो गुरु ही सही मार्ग दिखाते

इन दोनों की दी हुई शिक्षा से
हम बालक जग में अपना नाम कमाते

माता-पिता जीवन दर्शन

-विभा कुर्मी, दसवीं (द)

पिता शब्द है जीवन दर्शन माँ जीवन का सार,
पिता शांत है सागर सा, माँ गंगा की धार,
पिता अंधेरों में दीपक सा माँ भटकते की राह,
मात-पिता इन दो शब्दों में मिल जाता संसार,
पिता फूल है कांटों के संग खुशबू इसकी माँ,
पिता रात में ध्रुव तारे-सा दिशा दिखाती माँ,
पिता ठंड में सूरज जैसा गर्मी में शीतलता है माँ,
पिता सहनशीलता का दंभ है मर्यादा है माँ... !

मेहनत की राह

अंशिका दांगी, दसवीं (ब)

मेहनत से जो राह बनाता,
वही सच्ची मंजिल को पाता।
ज्ञान की ज्योति मन में जलाओ,
हर दिन कुछ नया सीख जाओ।
सत्य, सेवा, प्रेम अपनाओ,
सबके दिल में जगह बनाओ।
भारत का नाम ऊंचा है करना,
यही हमारा पहला सपना...

आशा सफलता की

-कीर्ति प्रजापति, दसवीं (स)

घने कँटीले रास्तों पर, तुम कदम बढ़ाते जाना,
निराशा के इन बादलों में, दीप आशा का जलाना।
माना कि राहें मुश्किल हैं, और रात अभी घनी है,
पर याद रखो हर भोर से पहले, एक काली रात बनी है।
टूटे जो हौसला कभी, तो मन को यह समझाना,
हारना नहीं है लड़ना है, यह प्रण तुम दोहराना।
मेहनत की स्याही से अपनी, तुम नई कहानी लिखना,
गिरकर भी हर बार मगर, तुम उठकर आगे बढ़ना।
लहरों से डरकर नैया कभी, पार नहीं हो पाती,
और मन में जगी आशा ही, मंजिल का मार्ग दिखाती।
रख अटूट विश्वास खुद पर, एक दिन वह पल भी आएगा,
सफलता का यह सुंदर सूरज, तेरे आँगन मुस्काएगा।
धैर्य की इस कठिन परीक्षा में, तुम पीछे मत हटना,
लक्ष्य को पाकर ही अब तो, तुमको है दम लेना।
यही आशा जीवन का संबल, यही जीत का गान है,
सफलता चूमेगी कदम तुम्हारे, यह निश्चित परिणाम है।

वक्त

-साहिल अहिरवार, 10वीं (अ)

ऊपर वाला जब परीक्षा लेता है तो हालात बदल देता है,
और जब साथ देता है तो किस्मत बदल देता है।
आज जो दर्द मिल रहा है,
हो सकता है वही कल तुम्हारी सबसे बड़ी ताकत बने।
जिंदगी में हर चीज हमारी मर्जी से नहीं होती,
कुछ फैसले वक्त करता है और वक्त से बड़ा कोई नहीं।
इसलिए तू रो मत,
क्योंकि अँधेरी रात के बाद सुबह जरूर आती है।
भरोसा रख भगवान पर।

सफलता का मार्ग

-साहिल अहिरवार, 10वीं (अ)

दुनिया आपकी मेहनत नहीं, सफलता देखती है, लोग तब साथ होते हैं, जब आप कुछ होते हैं। आपके संघर्ष में किसी को दिलचस्पी नहीं होती लेकिन आपकी जीत सबकी जुबान पर होती हैं। लोग सलाह देंगे, ताने मारेंगे, रोकेंगें भी, लेकिन रास्ता आपको खुद ही बनाना होगा।

कोई आपका दर्द नहीं समझेगा, जब तक आप खुद मजबूत नहीं बनोगे। सपनों की कीमत चुकानी पड़ती है। नींद, आराम और शौक सब कुर्बान करने पड़ते हैं। हर दिन खुद से एक ही सवाल करो, क्या मैं अपने सपने के लिए सबकुछ देने को तैयार हूँ। अगर हाँ, तो कोई आपको रोक नहीं सकता; याद रखो दुनिया में वहीं बदलाव लाते हैं, जो हार मानने से इंकार कर देते हैं।

शिक्षक और विद्यार्थी

-नैन्सी राजपूत, दसवीं (द)

शिक्षक ज्ञान का दीप जलाते,
जीवन की राह हमें दिखलाते।
सच्चाई, सेवा, प्रेम सिखलाते,
हर मुश्किल में लड़ना सिखाते।

विद्यार्थी हैं देश का भविष्य,
मेहनत जिनका सबसे बड़ा अस्त्र।
सपनों को वे सच कर जाते,
अपने कर्म से नाम कमाते।

शिक्षक और विद्यार्थी का नाता,
विश्वास और सम्मान से है बँधता।
दोनों मिलकर रचते इतिहास, ज्ञान,
संस्कार और उज्ज्वल प्रकाश

आओ मिलकर प्रण यह करें,
शिक्षा का सदैव सम्मान करें।
गुरु का सम्मान ज्ञान का साथ,
यही है जीवन की सच्ची बात।

शिक्षा का महत्त्व...

ज्ञान से बड़ा कोई धन नहीं,
और शिक्षा से बड़ा उपहार नहीं।
जो सीखने की चाह रखता है,
उसके लिए कोई हार नहीं।

किताबें रास्ता दिखाती हैं,
और मंजिल तक पहुँचाती हैं।
शिक्षा ही तो रोशनी है,
जो अँधेरे को मिटाती है।

इसलिए शिक्षा का सम्मान करो,
ज्ञान को अपना हथियार बनाओ।
क्योंकि जो सीखता रहता है,
वही जीवन में आगे बढ़ पाता है।

-साहिल अहिरवार
दसवीं (अ)

बचपन की यादें

कागज की वो नाव वो सावन का पानी
बहुत याद आती है बचपन की कहानी
न कल की थी चिंता न आज का था डर
कहां खो गई वो बेफिक्री सुहानी.... ?

मुस्कान

एक छोटी सी मुस्कान
सब दूरियां मिटा देती है
मुरझाए हुए चेहरे पर भी
आस जगा देती है।
रख सको तो दिल में हमेशा
इसे संजोकर रखो।
यह रुठे हुए अपनों को भी
पल में मान देती है।
सिर्फ एक छोटी सी मुस्कान

मुखोटे हटाकर मुस्कुराओ

भागती दौड़ती इस दुनिया में
थोड़ा ठहर कर मुस्कुराओ।
चेहरों पर जो नकली पर्दा है
उस मुखोटे को आज हटाओ।

क्या हुआ जो कुछ ख्वाब अधूरे हैं,
जो पास है उसमें सुकून पाओ।
ऊंचे महलों की चाहत में तुम,
मिट्टी की खुशबू ना भूल जाओ।

पैसे की इस अंधी दौड़ में,
अपनों का साथ कमाओ।
जिंदगी एक ही बार मिलती है,
इसे खुलकर जीना सीख जाओ।
एक बार तो खुलकर हंस लो,
जिंदगी जीना सीख जाओ।

-चाँदनी अहिरवार, दसवीं (द)

आजाद-तिलक की जन्मजयंती

गुरुकुल विद्यालय में 23 जुलाई को चंद्रशेखर आजाद एवं बाल गंगाधर तिलक जी की जन्मजयंती के अवसर पर कक्षा दसवीं (स) के दो छात्रों द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। संस्कार यादव ने श्री बाल गंगाधर तिलक जी का और दिव्यांश जैन ने चंद्रशेखर आजाद का क्रमशः उनके व्यक्तित्व को प्रकाशित किया।

स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राणों को न्यौछावर करने वाले इन दोनों ही वीर सपूतों द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों पर प्रकाश डालकर उनके संक्षिप्त जीवन को हम सभी के सामने प्रस्तुत किया। जिसका निर्देशन श्रीमान संतोष जी पुरोहित द्वारा किया गया।

माँ

-अनन्या ठाकुर, दसवीं (अ)

माँ शब्द में ही संसार बसा है,
माँ की गोद में ही स्वर्ग दिखता है ।
थकान मिटा देती है उनकी एक मुस्कान
और प्यार से हर दुख मिट जाता है
भूख लगे तो पहले खाना खिलाती
सर्दी लगे तो चादर उड़ाती
बिना कहे सब बात समझती
आँख से आंसू आए तो सीने से लगा लेती
रात भर जगा कर हमें सुलाती
अपना सुख भूल कर हमें हंसाती
पहली शिक्षक वही पहली दोस्त वही
हर गलती पर माफ करने वाली वही
माँ की ममता का कोई मोल नहीं
मन की दुआओं का कोई तोल नहीं
जीवन की हर खुशी उसी से है
जीवन का हर फूल और मोल उसी से है
दुनिया चाहे कितनी भी बदल जाए
माँ का प्यार कभी ना बदलता
माँ तू है तो, घर घर लगता है
माँ तू है तो हर दिन त्यौहार लगता है
आपकी मेहनत का कोई हिसाब नहीं
आपके प्यार की कोई सीमा नहीं
मेरी माँ जैसी दुनिया में बात नहीं।।

जीवन की डगर

माना मुश्किल है जीवन की डगर
पर तू खुद पर हिम्मत रख
तुम खुद ही दोगे खुद का साथ
खुद ही थामोगे खुद का हाथ
ठान लिया है तो डरना क्या
इस सफर के तुम ही राही
तो जीना क्या और मरना क्या
यह इम्तिहान है तुम्हारे जीवन का
तुम सिर्फ कर्म करो
फल मिलेगा मेहनत का

अगर कठिन है यह सफर तो रहने दो
सपने तो यूं ही देख लेते हैं
उनका पूरा करना आसान नहीं होता
एक सपना वह जो रात को आता है
और एक वह जो सोने नहीं देता है
फर्क होता है इन दोनों में इसलिए
इन्हें देखना आसान नहीं होता है
रुकना नहीं इस सफर में
थकना नहीं इस डगर में

-प्रियंका लोधी, दसवीं (अ)

बदलती दुनिया

बदल रही है दुनिया
बदल रहे हैं रिश्ते
हाथ में मोबाइल आया
दिल से दूर हुए अपने

पहले खत लिखे जाते थे
अब मैसेज से होती है बात
पहले आंगन में खेलते थे
पर अब गेम में हो जाती है रात

विज्ञान ने तरक्की की है
चांद तक पहुंच गए हम
रोबोट काम करने लगे
काम करने में खो गए हम

पेड़ कट गए, सड़क बनी
नदियां भी मैली हुई
विकास के नाम पर
प्रकृति भी घबराई हुई

फिर भी उम्मीद की किरण बाकी है
युवा जोश से भरपूर है
अगर दिल से चाहे हम
फिर दुनिया सुंदर बना सकते हैं ! !

-अनन्या ठाकुर, दसवीं (अ)

पितृ प्रेम

-करुणा दांगी, दसवीं (अ)

पिता का लाड़, पिता का दुलार
हर किसी को नहीं मिलता पिता का प्यार
पिता की हर डांट में छुपा मेरे भविष्य का सुधार
वही मेरे जीवन का है आधार

पिता का मान करो सम्मान करो
क्योंकि पिता हर किसी के पास नहीं होते
पिता की हर सीख को अपने दिल में भरो
क्योंकि पिता का साया है अनमोल

पिता ही बेटी का होता अभिमान
पिता ही बेटी का होता सम्मान
पिता से ही हर बेटे को मिलता साहस
पिता ही घर की मजबूत नींव

पिता मेरे जीवन की पहली दहलीज
पिता मेरे लिए ईश्वर समान
सच्चाई तो यह है कि पिता से ही
हर बच्चे की है पहचान

श्रेष्ठ विद्यार्थी

माह जुलाई में अपने ज्ञान से जिस विद्यार्थी ने सभी का ध्यान आकर्षित किया; ऐसे छात्र **अनुज प्रजापति** (12वीं, कृषि) को माह का **श्रेष्ठ विद्यार्थी** चुना गया।

विद्या का मंदिर

-भव्या श्रीवास्तव, दसवीं (अ)

गुरुकुल की इस सुंदर बगिया में, हम फूल बन खिल जाएँगे,
ज्ञान की जो भी राह मिलेगी, उस पर बढ़ते जाएँगे।

किताबों के पन्नों में अपनी, नई पहचान बनाएँगे,
छूकर गगन की ऊँचाइयों को, जग में नाम कमाएँगे।

यादों की इस मीठी महफिल में, सब मिलकर मुस्कुराएँगे,
जो पढ़ेंगे आज यहाँ पर, वे ही काम में आएँगे।

मेहनत की इस पावन धारा में, नित हम डुबकी लगाएँगे,
खुद को काबिल बनाकर जग में, गौरव अपना बढ़ाएँगे।

सीख रहे हैं जो भी हम, उसे जीवन में अपनाएँगे,
गुरुकुल की इस शान को हम, सदा ही ऊँचा उठाएँगे।

आज की बदलती प्रकृति

- दीपिका लोधी, 10वीं (अ)

पहले भोर में चिड़ियाँ गीत सुनाती थीं,
अब सवेरे-सवेरे हॉर्न की आवाज आती है।
पहले खेतों में हरियाली लहराती थी,
अब हर तरफ ईंट और सीमेंट नजर आती है।

पहले नदी निर्मल धारा बहाती थी,
अब उसी नदी में गंदगी तैरती जाती है।
पहले पेड़ों की छाँव सबको भाती थी,
अब पेड़ काटकर दुकानें बनती जाती हैं।

मौसम के दिन भी अब बदलते जा रहे हैं,
गर्मी ज्यादा, बारिश भी रूठती जा रही है।
धरती माँ भी अब थकती जा रही है,
और हम फिर भी आँखें मूँदते जा रहे हैं।

चलो मिलकर एक पेड़ तो लगाते हैं,
पानी की हर बूँद को बचाते हैं।
नहीं तो आने वाली पीढ़ी बस तस्वीरें देखती रह जाएगी,
और हरी-भरी धरती सिर्फ याद बनकर रह जाएगी।

अनुशासन का महत्व

अनुशासन है ऐसी चीज, जो दिलाए तुझे हर पल जीत।
मन में होगा जब भी संदेह, पर छोड़ना ना अपना नेह।
क्या तू वही है जो पहले था ? पहले तूने बस सोचा था।
आज ये वह मंजर है, अद्भुत सफलता का समंदर है।
न सिर्फ तुझे कुछ मिला, तू सब कुछ हासिल कर चला।
जो आलस से कभी न मिला, वह अनुशासन ने दिला दिया।

-रिमशा राय, 10वीं (द)

बारिश की सुंदरता

बारिश का मौसम आया, पानी साथ में लाया।
बच्चों के दिलों में फिर से, नाव बनाना छाया।
सड़क पर भरा पानी देख, हमारा दिल बहलाया।
पानी में कूदने का खयाल, हमारे मन में आया।
सब बच्चों ने मिल-जुल कर, अपना छाता फहराया।
मच्छरों ने भी फिर अपनी, सेना को बढ़ाया।
बारिश का मौसम आया, पानी साथ में लाया।
हरी-भरी सुंदरता ने, हमारा दिल चुराया।
बारिश के इंद्रधनुष ने, सौंदर्य अपना दिखलाया।
बारिश का मौसम आया, पानी साथ में लाया।

-रिमशा राय, 10वीं (द)

Mistakes don't define you

-Vibha Kurmi, 10th-D

Mistakes don't define you
They help you to grow.
Everyone makes mistake in life
It is a normal part of learning
When you fall, don't feel ashamed
Stand up and try again...
Your mistakes are not your identity ,
They are lessons for the future.
Every failure teaches something new
Every step makes you stronger
So don't be afraid to make mistakes
Learn from them
Move forward
And remember, you are always
bigger than your mistakes.

Riddles(पहेलियाँ)

(1) What is always in front of you?
(2)What speaks without taking and share knowledge?
(3) What grows the more you share it?
(4) I walk without feet; I fly without wings?
(5) What goes up but never comes down?

-Kalpana Yadav, 10th (B)

Thought

“Don't wait for the perfect take the moment and make it perfect”

हेपिटाइटिस दिवस

28 जुलाई 'विश्व हेपेटाइटिस दिवस' के उपलक्ष्य में कक्षा 12वीं जीवविज्ञान की छात्रा भावना लोधी के द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें हेपेटाइटिस के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी गई। हेपेटाइटिस हमारे लीवर की एक गंभीर बीमारी है जिसके कुछ प्रकार होते हैं, इस बीमारी से सुरक्षा के लिए असरदार टीकाकरण भी उपलब्ध है। वक्तव्य के माध्यम से हम सभी ने जाना इसके लक्षण और बचाव क्या है... ? छात्रों को इस गम्भीर बीमारी से सुरक्षा और जागरूकता हेतु यह वक्तव्य विज्ञान विभाग के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया।

GURUKUL VIDYALAYA: TEACHER WORD SEARCH

गुरुकुल विद्यालय : शिक्षक-शिक्षिका वर्ग पहेली

अपने प्रिय शिक्षकों के नाम खोजें!

D	J	V	Z	N	X	S	U	B	B	N	J	A	X	G	Y	L	U	D	C	E	I
N	Y	K	T	I	D	U	J	V	U	B	J	E	V	W	H	N	B	E	X	A	R
E	I	J	F	A	T	O	G	B	I	O	D	H	M	J	P	T	E	O	S	C	M
R	C	A	O	J	T	U	T	N	T	X	B	Q	D	O	L	H	L	A	X	X	B
O	Z	M	J	V	N	M	A	N	I	S	H	A	H	N	S	Y	R	T	W	F	O
H	J	I	X	A	D	G	V	G	X	R	C	M	G	I	A	Z	Q	W	E	J	N
T	E	T	Z	H	H	K	S	E	M	E	H	A	B	H	V	I	T	J	H	P	A
A	T	P	B	B	T	Y	A	I	Z	R	P	A	A	D	M	Z	R	K	L	R	H
R	X	Z	W	M	Y	H	S	E	G	D	N	W	V	D	Q	S	D	F	D	A	K
I	J	G	X	A	B	F	A	N	I	S	H	J	K	X	I	M	W	A	F	V	N
T	A	Y	M	S	M	T	L	E	A	O	D	U	R	R	E	X	Q	S	L	E	I
R	V	P	A	B	D	F	H	J	O	U	P	S	K	H	G	P	H	B	E	E	R
A	V	R	F	U	D	A	A	Y	X	M	I	L	X	B	G	B	R	M	V	N	I
H	J	I	H	Y	M	T	B	L	T	D	E	P	K	C	Q	N	G	T	G	V	H
B	J	Y	R	N	I	M	U	G	Z	V	H	S	F	L	P	M	Q	F	R	O	S
E	N	A	Q	M	P	H	A	H	P	R	I	Y	A	N	K	A	P	A	D	E	Y
C	F	N	A	Q	S	L	A	R	A	V	I	K	A	N	T	S	O	N	I	D	S
W	Y	K	P	N	G	T	N	U	P	G	M	W	J	W	B	J	O	C	A	Z	U
Y	Q	J	A	C	Y	T	N	A	H	K	I	M	A	A	R	V	T	G	P	X	B
B	C	A	J	C	J	S	Z	A	N	U	H	O	O	T	I	A	I	N	Y	I	O
I	V	I	Q	U	L	E	I	M	X	J	N	E	D	T	H	N	V	W	B	X	H
P	Y	N	I	Y	C	U	G	A	K	E	L	K	H	A	N	B	K	D	E	I	B
X	U	N	F	V	B	I	P	R	I	Y	A	A	I	N	U	O	E	F	H	J	M
D	E	V	E	N	R	A	J	A	I	N	V	I	K	C	B	N	Y	E	Z	I	Q

निर्देश- शिक्षक-शिक्षिकाओं के नाम क्षैतिज (Horizontal), ऊर्ध्वाधर (Vertical) या तिरछे (DIagonal) ऊपर से नीचे की ओर या नीचे से ऊपर की ओर कहीं भी हो सकते हैं और किसी भी क्रम में हो सकते हैं।

प्रस्तुति- मुस्कान कुर्मी, 10वीं (द)

बूझो तो माने...

एक पहेली ?

एक राजा को किसी कार्यवश दो नींबू की आवश्यकता पड़ी, तो उन्होंने अपने मंत्री को नींबू लाने के लिए भेजा। जब मंत्री नींबू तोड़ने के लिए बगीचे में पहुंचे तो उन्हें बीच में तीन द्वार पार करने पड़े। तीनों द्वारों पर एक-एक सिपाही खड़े थे; तीनों सिपाहियों ने कहा- तुम जितने भी नींबू लाओगे, उनमें से आधे नींबू और एक अतिरिक्त नींबू हमें देना होंगे। तभी हम तुम्हें नींबू लेने के लिए जाने देंगे। ऐसा प्रत्येक द्वार पर खड़े सिपाही ने कहा।

तो बताइए.... ??

मंत्री बगीचे से कितने नींबू लाएगा कि वह अपने पूरे नींबू में से आधे और एक अतिरिक्त नींबू प्रत्येक सिपाही को दे सके और दो नींबू राजा के लिए बचाए जा सके।

वर्ग पहेली

–मधुर जैन, आगम जैन (10वीं-अ)

ब	क	ल	सी	जे	पी
क	च्चा	ते	ल	आ	म
अ	ञ	नी	र	स	अ
ग	मृ	जा	वि	त्री	म्बा
वै	भ	व	वा	ज	नी
प	रि	वा	र	न	य

संकेत

1. वर्तमान में विद्यार्थियों तथा बेरोजगार युवाओं के लिए कौन सा संगठन आंदोलन कर रहा है।
2. अमेरिका तथा ईरान के युद्ध का कारण है।
3. क्रिकेट का 15 वर्षीय खिलाड़ी कौन है। 4. गुरुकुल के विद्यार्थी किसके समान
5. भारत का सबसे अमीर कौन है। 6. गरम मसाले में सर्वाधिक खुशबू वाला मसाला।
7. गर्मी के मौसम का प्रचलित फल। 8. अधिकांश विद्यार्थियों को किस दिन का इंतजार रहता है।
9. बादल का समानार्थी। 10. प्रत्येक व्यक्ति के जन्म की अवस्था।

ध्यान दें– छात्र गुरुकुल सन्देश में दी गई पहेलियों व वर्ग पहेली के उत्तर, नाम और कक्षा लिखकर सम्पादक मण्डल के पास दिनांक 20 अगस्त तक दे देवें। प्रथम तीन विजेताओं का चयन लकी ड्रा के माध्यम से किया जाएगा। वर्ग पहेली के उत्तर अगस्त माह के संस्करण में प्रकाशित किए जाएंगे।

वार्षिक खेल उद्घाटन समारोह

समाचार लेखिका-रोशनी रजक (10वीं-ब)

शनिवार, 04 जुलाई 2025 को विद्यालय में वार्षिक खेल उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री रविन्द्र खाटोल (विकासखण्ड खेल अधिकारी) के तिलक-वंदन एवं स्वागत गीत के गायन के साथ हुआ। इसके पश्चात् हमारे विद्यालय की वरिष्ठ शिक्षिका श्रीमती वनिता श्रीवास्तव मैम द्वारा वर्ष भर होने वाली खेल गतिविधियों का विवरण दिया गया और यह वादा भी किया गया कि वर्ष भर खेलों का संचालन पूर्ण निष्ठा के साथ किया जाएगा।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि द्वारा मशाल प्रज्ज्वलित करके अरविन्दो सदन की छात्रा पलक लोधी को दी गई। इस क्रम को पूर्ण करते हुए निवेदिता सदन से रितिका यादव, शिवाजी सदन से नैन्सी मौर्य व विवेकानंद सदन से रोशनी रजक ने अपने-अपने दल का प्रतिनिधित्व किया। छात्र-छात्राओं ने पूरे जोश और उत्साह के साथ मैदान में विजयी दौड़ लगाई और अंत में मुख्य अतिथि द्वारा मशाल को निर्धारित स्थान पर सुशोभित किया गया।

इसके बाद मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को खेलों के महत्व से अवगत कराया। गुरुकुल की परंपरा के अनुसार प्राचार्य जी द्वारा मुख्य अतिथि को अंग-वस्त्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। अंत में प्राचार्य जी ने अपना उद्बोधन दिया व सभी विद्यार्थियों को खेल की प्रतिज्ञा दिलाई।

वाद-विवाद प्रतियोगिता

समाचार लेखिका-रोशनी रजक (10वीं-ब)

दिनांक 11 जुलाई 2026 को गुरुकुल विद्यालय में 'विश्व जनसंख्या दिवस' के अवसर पर श्रीमती ज्योति तिवारी मेम एवं कु. आस्था जैन मेम के नेतृत्व में "भारत की बढ़ती जनसंख्या : चुनौती या ताकत" विषय पर आधारित वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें चारों सदनों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने ज्ञान का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता में अरविन्दो सदन से विभा कुर्मी, लक्ष्मी राजपूत निवेदिता सदन से भव्या श्रीवास्तव, भावना लोधी शिवाजी सदन से प्रियंका लोधी, कुमकुम लोधी एवं विवेकानंद सदन से रोशनी रजक, आकांक्षा साहू ने अपने-अपने सदन का प्रतिनिधित्व किया।

प्रतियोगिता दो राउंड (चरणों) में संपन्न हुई। कार्यक्रम का संचालन पिंकी अहिरवार व दीपाली दांगी द्वारा किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संस्था के प्राचार्य महोदय श्री प्रयंक जैन जी ने की एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री अशोक कुमार जी उपस्थित रहे। निर्णायक की भूमिका में वरिष्ठ शिक्षक श्रीमान एच.के. अग्निहोत्री जी एवं श्रीमान कीर्तिवर्धन श्रीवास्तव और श्री प्रकर्ष जैन जी ने निभाई।

प्रतियोगिता में विषय के पक्ष में बोलने वाले वक्ताओं ने बढ़ती जनसंख्या को देश के विकास में एक बड़ी चुनौती बताया। वहीं दूसरी तरफ, विषय के विपक्ष में बोलने वाले विद्यार्थियों ने पूरे जोश के साथ इस बात का खंडन किया। दोनों पक्षों के तीखे तर्क, शब्दों का चयन और मंच पर उनका आत्मविश्वास पूर्ण प्रदर्शन देखकर निर्णायकों के लिए विजेता का चुनाव करना बहुत मुश्किल था।

कार्यक्रम के अंत में प्राचार्य जी ने सभी प्रतिभागियों की सराहना करते हुए विद्यार्थियों को परिणाम से अवगत कराया, जिसमें प्रथम स्थान निवेदिता सदन, द्वितीय स्थान विवेकानंद सदन, तृतीय स्थान शिवाजी सदन, चतुर्थ स्थान अरविन्दो सदन ने प्राप्त किया।

संस्कृत प्रतियोगिता

दिनांक 15 जुलाई 2026 को हमारे विद्यालय में कक्षा छठवीं से दसवीं तक के विद्यार्थियों के लिए एक संस्कृत प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। यह प्रतियोगिता प्रत्येक कक्षा के निर्धारित संस्कृत कालांश के दौरान आयोजित हुई, जिसमें विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

प्रतियोगिता का स्वरूप रोचक रखा गया था, जिसमें पर्चियों के माध्यम से अपने विषय का चयन किया गया। पर्ची पर प्राप्त विषय पर विद्यार्थियों को धाराप्रवाह संस्कृत में अपने विचार व्यक्त करने थे और तत्पश्चात व्याकरण संबंधी प्रश्नों के उत्तर देने थे। इस प्रतियोगिता ने न केवल विद्यार्थियों के संस्कृत भाषा के ज्ञान को परखा, बल्कि उनके आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति कौशल को भी नई दिशा प्रदान की।

नशामुक्ति दिवस का आयोजन

समाचार लेखिका-रिमशा राय (10वीं -द)

हमारे विद्यालय में ''नशा मुक्ति दिवस'' का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में हमारी भागीदारी तय करना था।

इस कार्यक्रम का सबसे मुख्य और प्रभावशाली आकर्षण श्रीमान इरशाद खान सर द्वारा तैयार की गई एक विशेष डॉक्यूमेंट्री (वृत्तचित्र) थी, जिसे स्कूल के सभी बच्चों को दिखाया गया। इस डॉक्यूमेंट्री ने हम सभी के मन और मस्तिष्क पर एक बहुत ही गहरा और सकारात्मक प्रभाव छोड़ा है। इस कार्यक्रम में प्राचार्य महोदय (प्रिंसिपल सर), समस्त शिक्षक-शिक्षिकाएँ एवं सभी विद्यार्थी सम्मिलित हुए थे।

इस डॉक्यूमेंट्री को देखने के बाद हमें गहराई से समझ आया कि नशा करना कितना हानिकारक है। यह न केवल एक व्यक्ति के स्वास्थ्य को बर्बाद करता है, बल्कि उसके पूरे परिवार और भविष्य को भी अंधकार में धकेल देता है।

इस कार्यक्रम से हम सभी विद्यार्थियों ने यह सीखा है कि हमें खुद को तो नशे की इस लत से दूर रखना ही है, साथ ही समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभानी है। यदि कोई व्यक्ति नशे की गिरफ्त में है, तो हमें उससे नफरत करने के बजाय उसे प्यार से समझाना चाहिए। हमें उसे इस बुरी आदत को छोड़ने और एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

विद्यालय में विद्यार्थी परिषद के सदस्यों का शपथ ग्रहण समारोह

समाचार लेखिका-नैन्सी राजपूत (10वीं-अ)

हमारे विद्यालय के गौरवशाली इतिहास में 18 जुलाई 2026, शनिवार का दिन एक अत्यंत महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में दर्ज हुआ। विद्यालय प्रांगण में आयोजित विद्यार्थी परिषद का शपथ ग्रहण समारोह नेतृत्व क्षमता और उत्तरदायित्व के बोध का एक उत्कृष्ट उदाहरण बना।

कार्यक्रम का शुभारंभ अत्यंत गरिमामयी रुप से हुआ, जहाँ मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय के प्राचार्य श्रीमान प्रयंक जैन सर तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्राथमिक विभाग के प्रधानाचार्य श्रीमान अशोक कुमार जैन सर उपस्थित रहे। इनका स्वागत श्रीमान अमित नेमा सर द्वारा चंदन-तिलक लगाकर किया गया। इसके उपरांत समारोह का कुशल संचालन श्रीमान एच. के. अग्निहोत्री सर द्वारा किया गया, जिन्होंने न केवल कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप दिया, बल्कि अपने मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को नेतृत्व का सही अर्थ भी समझाया।

समारोह के इस क्रम में सर्वप्रथम विद्यार्थी परिषद् के नवनिर्वाचित सभी 39 सदस्यों का चंदन-तिलक, अंगवस्त्र और पदक पहनाकर सम्मान किया गया। इसके पश्चात मुख्य अतिथि महोदय ने सभी सदस्यों को विद्यालय एवं विद्यार्थियों के हित के लिए शपथ दिलाई। विशिष्ट अतिथि महोदय ने भी अपने अनुभव साझा करते हुए विद्यार्थियों का मार्गदर्शन किया।

परिषद में अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, सचिव, सह-सचिव, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं क्रीड़ा मंत्री शामिल थे। इसके साथ ही चारों सदन (अरविन्दो, निवेदिता, शिवाजी और विवेकानंद) के 32 चयनित प्रतिनिधियों अर्थात प्रत्येक सदन से 8-8 प्रतिनिधियों का चयन किया गया। जिसमें दलनायक, उप-दलनायक, साहित्यिक-सांस्कृतिक तथा क्रीड़ा मंत्री शामिल थे, जो छात्र और छात्राओं दोनों में अलग-अलग विभाजित थे।

कार्यक्रम के अंत में, प्राचार्य महोदय का उद्बोधन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत प्रेरणादायक रहा। उन्होंने अपने ओजस्वी विचारों से सभी को सत्य, अनुशासन और सेवा की राह पर चलने का निर्देश दिया। यह शपथ ग्रहण समारोह न केवल एक औपचारिक आयोजन था, बल्कि विद्यार्थियों के भीतर नेतृत्व की भावना और विद्यालय के प्रति अटूट समर्पण को जाग्रत करने का एक पावन संकल्प था।

विज्ञान प्रदर्शनी

समाचार लेखिका-भव्या श्रीवास्तव (10वीं-अ)

हमारे विद्यालय में दिनांक 10.07.26, दिन शुक्रवार को विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी कक्षा दसवीं के विद्यार्थियों के ग्रीष्मकालीन अवकाश के गृहकार्य का परिणाम थी, जो सुश्री अमिता जैन मैम के द्वारा दिया गया था। उन्हीं के कुशल नेतृत्व और मार्गदर्शन में इस विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन हुआ और यह अत्यंत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई।

विद्यार्थियों ने अपने मॉडल को बहुत ही सलीके से तैयार किया था। सभी के द्वारा विद्यार्थियों के इन प्रयासों की मुक्तकंठ से सराहना की गई। यह आयोजन विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को निखारने का एक उत्कृष्ट माध्यम बना। निर्णायक की भूमिका संस्था प्राचार्य श्री प्रयंक जैन, वरिष्ठ शिक्षक श्री राकेश जैन एवं श्रीमती दीपासिंह नेक्या ने निभाई।

अनूठी पारंपरिक शैली में हुआ गुरुपूर्णिमा का आयोजन

समाचार लेखिका-दीपिका लोधी (दसवीं-अ)

विगत 29 जुलाई को हमारे विद्यालय में गुरु पूर्णिमा का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गुरु पूर्णिमा के पर्व प्रत्येक वर्ष आषाढ़ माह की पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। गुरु पूर्णिमा इस पावन और सुंदर अवसर पर हमारे विद्यालय में गुरुओं के प्रति अगाध श्रद्धा-सम्मान और कृतज्ञता ज्ञापित करने के लिए यह भव्य एवं ऐतिहासिक उत्सव आयोजित किया गया।संपूर्ण कार्यक्रम में विशेष बात यह रही कि यह गुरुओं के प्रति सम्मान का कार्यक्रम एक अलग ही पारम्परिक तरीके से मनाया गया; साथ ही इस कार्यक्रम की तैयारी विद्यार्थी परिषद के सदस्य, प्रत्येक सदन के नायक प्रतिनिधि एवं उनके सहयोगी और समस्त कक्षा प्रतिनिधि और उपप्रनिधियों के सहयोग से आयोजित हुआ।

इस समारोह में विद्यार्थियों ने अपने शिक्षकों का अनूठे और पारंपरिक अंदाज में अभिनंदन किया, जिससे पूरा प्रांगण श्रद्धा भाव से सराबोर हो गया। कार्यक्रम का सफल और ऊर्जावान संचालन विद्यार्थी परिषद की छात्राओं द्वारा किया गया।उत्सव का शुभारंभ मां सरस्वती और महर्षि वेदव्यास जी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन एवं पूजन के साथ हुआ।इसके पश्चात विद्यालय के सचिव एवं सह सचिव द्वारा प्राचार्य महोदय एवं पधारे हुए विशिष्ट अतिथि महोदय का स्वागत पुष्पगुच्छ एवं तिलक के साथ किया गया।

समारोह की शुरुआत में सर्वप्रथम विद्यालय के सर्वोच्च पद पर आसीन एवं कुशल मार्गदर्शक प्राचार्य महोदय का विधिवत सम्मान किया गया।इसके पश्चात विद्यालय के सभी शिक्षकों तथा विद्यालय परिवार के समस्त कर्मठ कर्मचारियों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान की इस अनूठी विधि में प्रत्येक शिक्षक को चौकियों पर चरण रखकर बैठाया गया। विद्यार्थियों ने उनके चरणों में पुष्प अर्पित किए और उनके चरणों की वंदना की। इसके उपरांत सभी शिक्षकों को चंदन-तिलक, श्री फल, कलम जो कि शिक्षकों का प्रमुख आभूषण है.... विद्यार्थियों के द्वारा निर्मित ग्रीटिंग कार्ड और मिष्ठान खिलाकर सम्मानित किया गया। विशेष बात यह रही कि प्रत्येक कक्षा के कक्षा प्रतिनिधि और उपप्रतिनिधि ने आगे बढ़कर अपने-अपने गुरुओं का सत्कार किया; जो छात्र-शिक्षक के मधुर संबंधों की अनूठी मिसाल थी।

सम्मान की श्रृंखला के अंतिम चरण में विद्यालय के समस्त शिक्षकों को एक साथ मंच पर आमंत्रित किया गया।सभी गुरुजनों के सम्मान में सामूहिक रूप से स्वस्तिवाचन किया गया, जिससे पूरा वातावरण वेदमय और पवित्र हो गया।इसी बीच जैसे ही स्वस्तिवाचन संपन्न हुआ; ऊपर दीर्घा से विद्यार्थियों ने सभी शिक्षकों पर भव्य पुष्पों की वर्षा शुरू की। फूलों की इस रंग बिरंगी वर्षा की चादर ने सभी गुरुजनों के चेहरों पर संतोष और प्रसन्नता का भाव ला दिया जो कि देखते ही बनता था। यह दृश्य प्रांगण में उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति और विद्यार्थी के लिए अत्यंत भावुक और अविस्मरणीय था। अंत में इस सफल और सुव्यवस्थित आयोजन के लिए एवं विद्यार्थियों के अनुशासन की भरपूर सराहना की और राष्ट्रगीत के साथ ही इस भव्य कार्यक्रम गुरु पूर्णिमा का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

निबंध लेखन प्रतियोगिता

समाचार लेखिका-भव्या श्रीवास्तव (10वीं-अ)

हमारे विद्यालय में 08 जुलाई 2026 को कक्षा 6वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए ''दायित्व निर्वहन में नैतिक मूल्यों का महत्व'' विषय पर एक निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।इस प्रतियोगिता का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में समाज, राष्ट्र और अपने विद्यालय के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को नैतिक दृष्टिकोण से समझने की भावना विकसित करना था।

सभी विद्यार्थियों ने विषय की गंभीरता को समझते हुए अपने विचारों को अत्यंत ओजस्वी और तर्कपूर्ण शब्दों में पिरोया। विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी और रचनात्मकता ने इस कार्यक्रम को एक नई ऊँचाई प्रदान की। यह प्रतियोगिता न केवल लेखन कौशल को निखारने का एक सशक्त माध्यम बनी, बल्कि इसने सभी विद्यार्थियों को विद्यालय के प्रति निष्ठा और जीवन में ईमानदारी के महत्व का भी स्मरण कराया।

''सड़क सुरक्षा'' विषयक पटल सज्जा प्रतियोगिता

सदनवार पटल सज्जा प्रतियोगिता के अंतर्गत माह जूलाई में चारों दलों ने ''सड़क सुरक्षा'' विषय को मुख्य रखते हुए अपने पटल को सजाया। जिसमें क्रमशः प्रथम विवेकानन्द दल, द्वितीय अरविन्दो दल, तृतीय निवेदिता दल एवं चतुर्थ शिवाजी दल ने स्थान प्राप्त किया। इन सभी बोर्ड को सजाने में एवं विषय वस्तु तैयार करने में दल के सभी विद्यार्थियों का सहयोग प्रशंसनीय रहा। ध्यातव्य हो कि प्रतिमाह इस प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में कौशल विकास किया जाता है।

सुरीली आवाजों और सुरों का संगम !

शनिवार, 25 जुलाई को एस. पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में प्राचार्य श्रीमान प्रयंक जैन की अध्यक्षता में संगीत शिक्षक श्री योगेश ठाकुर एवं वरिष्ठ शिक्षक श्री राकेश जैन के मार्गदर्शन में सदनवार एकल एवं समूह सुगम गायन कार्यक्रम का अत्यंत सफलतापूर्वक और भव्य आयोजन किया गया। इस संगीतमय कार्यक्रम को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया था। एकल गायन प्रतियोगिता के अंतर्गत विद्यार्थियों ने मंच पर अपनी व्यक्तिगत कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उनकी भावपूर्ण प्रस्तुतियों और सुरों की समझ ने वहाँ उपस्थित सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। समूह गायन प्रतियोगिता के अंतर्गत सदनों के प्रतिभागियों की अद्भुत टीम भावना और शानदार जुगलबंदी देखने को मिली। बच्चों के सुर-से-सुर मिलाकर गाने की कला ने पूरे वातावरण को ऊर्जा और संगीत के रंग में रंग दिया।

इस एकल एवं समूह गायन प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के गायन कौशल को परखने की अहम भूमिका हमारे सम्मानित निर्णायक मंडल में श्रीमान प्रशांत जी, श्री श्रीराम चतुर्वेदी एवं श्री संतोष पुरोहित ने निभाई। उनके बहुमूल्य समय, मार्गदर्शन और निष्पक्ष निर्णय के लिए विद्यालय परिवार उनका हृदय से आभारी है।

कार्यक्रम का सफल संचालन विद्यालय की शिक्षिका सुश्री आस्था जैन ने किया। वाद्ययन्त्रों के क्रम में छात्र हार्दिक चौरसिया ने सिन्थेसाइजर, तरुण विश्वकर्मा ने तबला, श्रेयांस दांगी ने ढोलक एवं संस्कार जैन ने ऑक्टोपेड पर अपनी सहभागिता दी। भाग लेने वाले सभी होनहार विद्यार्थियों और विजेता सदनों को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

हिंदी साहित्य में प्रभावी व्यक्तित्व के धनी : आलोक धन्वा

हम बात कर रहे हैं हिंदी साहित्य के ऐसे व्यक्तित्व की जिनका अल्प लेखन भी साहित्य की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है। 2 जुलाई 1948 को बिहार के मुंगेर में जन्मे आलोक धन्वा....एकमात्र काव्य-संग्रह .... 'दुनिया रोज बनती है।'...... के माध्यम से हिंदी में जनता का आदमी, गोली दागों पोस्टर, पतंग जैसी बाल मनोविज्ञान पर आधारित कविताओं से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। धन्वा जी जन्मजयंती के उपलक्ष्य में उनके कृतित्व और व्यक्तित्व को एक वीडियो के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।जिसका निर्देशन हिंदी विभाग की शिक्षिका श्रीमति भारती राठौड़ ने तैयार किया। महान साहित्यकार का जीवन परिचय हम सभी को प्रेरित करता है कि कम कार्य परन्तु उत्कृष्ट कार्य के द्वारा श्रेष्ठता प्राप्त कर सकते हैं।

बचपन

बचपन की सुनहरी बातें....
जो अब बस यादें हैं....।।
वो बचपन भी..... क्या बचपन था??
जिसमें बहुत बचपना था...
उस बचपन में मासूमियत थी
उस बचपन में नादानी थी
घर के बाहर की वो गलियां थी
उन गलियों में था
चहकते कदमों का शोर कदमों की चंचलता,
जिसे कभी-कभी रोका जाता था
आज खो गया वो बचपन
उन मैदानों का हो गया संकुचन
बंद घरों के उन छोटे कमरों में
नया युग नया समय आ गया
हां ! बचपन की भेंट चढ़ाकर
हमनें तकनीकी युग पा लिया....
हां ! पा लिया हमने तकनीकी युग को.... ! !

श्रीमति भारती राठौड़
शिक्षिका (हिन्दी विभाग)

विद्यालय का सुयश

गुरुकुल के स्वर्णिम इतिहास में एक पन्ना और जुड़ने जा रहा है; प्रत्येक कार्य दो बिंदुओं पर निर्भर करता है... छोटे छोटे प्रयास और निरंतरता..... इसी का जीवंत उदाहरण है हाल ही में घोषित हुए मध्यप्रदेश PAT परीक्षा के परिणाम में विद्यालय के विद्यार्थियों ने एक बार पुनः सफलता का परचम लहराया। जिन्होंने अपनी दिन रात की मेहनत, लगन और एकाग्रता से यह मुकाम हासिल किया।

बबली अहिरवार, अनुभव जैन, शुभम लोधी, गुलशन कुर्मी..... इन चारों विद्यार्थियों ने ना केवल अपने माता-पिता, अपने परिवार बल्कि पूरे गुरुकुल विद्यालय का सिर गर्व से ऊंचा किया। कृषि क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने और देश के विकास में अपना योगदान देने के लिए इन छात्रों द्वारा यह कदम बढ़ाया गया; यह बेहद सराहनीय है।

कोई भी सफलता रातों-रात नहीं मिल जाती, इसके पीछे कई रातों की नींद, छोटे-छोटे त्याग और अनगिनत प्रयास छुपे होते हैं। इनकी सफलता ने यह साबित कर दिया कि अगर इरादे मजबूत हो तो कोई भी कार्य कठिन नहीं।

गुरुकुल परिवार इन सभी विद्यार्थियों की सफलता के लिए इन्हें हार्दिक बधाइयां प्रेषित करता है।

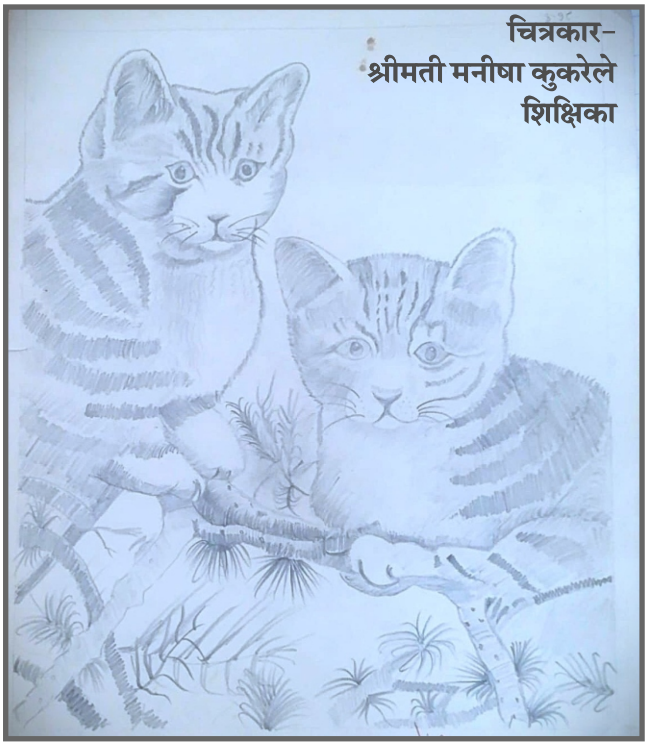

चित्रकार-
श्रीमती मनीषा कुकरेले
शिक्षिका

एक पेड़ माँ के नाम

खुरई विधानसभा में 18 जुलाई को वृहद वृक्षारोपण का कार्य किया गया, जिसमें हजारों गणमान्य नागरिकों के साथ-साथ शहरवासियों एवं विद्यालय के विद्यार्थियों ने "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान में हिस्सा लेते हुए प्रकृति संरक्षण के उद्देश्य से वृक्षारोपण में भाग लिया। नगर में अनेक स्थानों पर यह कार्य किया गया।

जिसक्रम में पार्षद श्रीमती मोना धर्मेन्द्र सिंघई के सान्निध्य में गुरुकुल विद्यालय में सैकड़ों वृक्षों का रोपण कार्य किया गया। कक्षा ग्यारहवीं एवं बारहवीं के कृषि विभाग के समस्त विद्यार्थियों के साथ-साथ संस्था प्राचार्य श्री प्रयंक जैन कृषि विभाग से श्री अकील खान, श्री इन्द्राजसिंह दांगी एवं श्रीमती भारती राठौड़ भी मुख्यतः इसमें सम्मिलित हुए। सभी ने वृक्षों को लगाने के साथ-साथ उनके संरक्षण हेतु भी दृढ़संकल्पित हुए।

Friendship day celebrated with Enthusiasm at school

S. P. Jain Gurukul H. S. S. Khurai, July 30 Friendship Day was celebrated with great enthusiasm in the school. The programme began with student sharing meaningful good thoughts. An exhibition was also organised by the students. The entire activity was conducted under the guidance of the honorable principal sir, with the support of all teachers of English department. An anchoring of the programme was done by Bhavni Shrivastava, a student of class 8th'A.An action verb activity was conducted by Mr. K. P. Sisodiya sir which helped students learn in a fun way. Smt. Shashikiran Bajaj Ma'am and Mr. Praveen Shrivastava presented a beautiful poem. The event created a joyful atmosphere.....!!

ICAR स्थापना दिवस : कृषि विज्ञान और हमारा दायित्व

16 जुलाई को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कक्षा 11वीं (कृषि संकाय) की छात्रा काजल साहू द्वारा एक अत्यंत विचारोत्तेजक वक्तव्य प्रस्तुत किया गया।

काजल ने अपने वक्तव्य में बताया कि यह दिन मात्र एक संस्था का स्थापना दिवस नहीं है, अपितु यह कृषि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करता है।ICAR ने भारत में कृषि प्रणालियों के विकास में एक मील का पत्थर स्थापित किया है और यह विश्व की सबसे बड़ी राष्ट्रीय कृषि प्रणालियों में से एक है। भारत में हरित क्रांति लाने और कृषि क्षेत्र को अग्रणी बनाने में ICAR ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।इसके अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास के कारण ही आज देश में राष्ट्रीय खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित हो पाई है। इसके अलावा, संस्था ने कृषि क्षेत्र में उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

आज ICAR के वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का नाम ऊँचा कर रहे हैं।ICAR का कार्य केवल अनुसंधान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह नई तकनीकों और वैज्ञानिक जानकारियों को किसानों तक पहुँचाने का भी भगीरथी कार्य करता है।

अंत में सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि हमें भी कृषि विज्ञान के प्रति अपनी रुचि बढ़ानी चाहिए।नई तकनीकों को सीखकर, पर्यावरण का संरक्षण करके और अन्नदाता किसानों के प्रति सम्मान का भाव रखकर हम भी देश के विकास में अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं; क्योंकि 'जब किसान समृद्ध होगा, तभी हमारा देश समृद्ध बनेगा।'

उपन्यासकार मुंशी प्रेमचन्द जन्मजयंति

दिनांक 31 जुलाई को विद्यालय में मुंशी प्रेमचंद जी की जयंती को 'राष्ट्रीय लेखक दिवस' के रूप में मनाया गया।विद्यालय के शिक्षक श्री रविकांत सोनी ने अपने वक्तव्य के माध्यम से उनके जीवन-वृत्त एवं कार्यक्षेत्र पर प्रकाश डाला।उनके संघर्षशील जीवन से हमें यह प्रेरणा प्राप्त होती है कि कोई व्यक्ति कैसे सरलता एवं सहजता से जीवन का निर्वाह कर सकता है ?

उन्होंने अपने जीवन में हिंदी और उर्दू के लगभग डेढ़ दर्जन उपन्यास लिखे तथा 'प्रताप', 'जागरण' और 'हंस' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। उन्होंने लगभग 300 से भी अधिक कहानियाँ लिखीं, जो समाज के वास्तविक प्रतिबिंब को प्रकट करती हैं। एक कालजयी लेखक, विचारक, अनुवादक, सामाजिक कुरीतियों का विरोध करने वाले और शोषितों के प्रति संवेदना रखने वाले व्यक्तिके रूप में; वे समाज को संघर्षशीलता, सरलता, सहजता, देशभक्ति और नारी के प्रति सम्मान की भावना की शिक्षा दे गए।

ऐसे महान व्यक्तित्व के प्रति विद्यालय परिवार अपनी सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करता है और मुंशी प्रेमचंद जी के चरणों में प्रणाम करता है।

माह अगस्त की कार्ययोजना सत्र-2026-27

1	3-Aug-26	MONDAY	भाषा विभाग (हिन्दी)	पं. मैथिलीशरण गुप्त जयंती	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	श्री श्रीराम चतुर्वेदी
2	5-Aug-26	WEDNESDAY	भाषा विभाग (हिन्दी)	शिवमंगल सिंह सुमन जयंती	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	श्रीमती प्रिया जैन
3	8-Aug-26	SATURDAY	विज्ञान विभाग	भारत छोड़ो आंदोलन दिवस	तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता	IX-XII (सदनवार)	कु. अमिता जैन, श्री नीलेश राय
4	12-Aug-26	WEDNESDAY	विज्ञान विभाग	विक्रम साराभाई जयंती	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	श्री इन्द्राजसिंह ढाँगी
5	15-Aug-26	SATURDAY	विद्यालयीन	स्वतंत्रता दिवस	सामूहिक नृत्य/काव्यपाठ/भाषण प्रतियोगिता	VI-XII (सदनवार)	श्री अमित नेमा
6	18-Aug-26	TUESDAY	कला एवं वाणिज्य विभाग	सुभाषचंद्र बोस पुण्यतिथि	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	श्रीमती शशिकिरण बजाज
7	19-Aug-26	WEDNESDAY	भाषा विभाग (हिन्दी)	तुलसीदास जयंती	प्रश्नमंच प्रतियोगिता	IX-XII (सदनवार)	श्री श्रीराम चतुर्वेदी, श्री एच. के. अग्निहोत्री
8	25-Aug-26	TUESDAY	भाषा विभाग (संस्कृत)	संस्कृत दिवस	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	कु. अनुभूति जैन
9	26-Aug-26	TUESDAY	कला एवं वाणिज्य विभाग	महिला समानता दिवस	वक्तव्य	सभी विद्यार्थी	श्रीमती ज्योति तिवारी
			कला एवं वाणिज्य विभाग	राखी एवं मेहंदी प्रतियोगिता	सामूहिक	इच्छुक विद्यार्थी	श्रीमती शशिकिरण बजाज
10	31-Aug-26	MONDAY	परीक्षा विभाग	मासिक मूल्यांकन परीक्षा		VI-XII	परीक्षा विभाग/विषयवार शिक्षक-शिक्षिका
11	खेलों के क्रम में 04 अगस्त से 11 अगस्त तक फुटबॉल (बालक वर्ग) एवं बास्केटबॉल (बालिका वर्ग) प्रतियोगिता आयोजित होगी।						
12	खेलों के क्रम में 13 अगस्त से 25 अगस्त तक कबड्डी (बालक वर्ग) एवं खो-खो (बालिका वर्ग) प्रतियोगिता आयोजित होगी।						
13	27 अगस्त से 30 अगस्त तक सभी विद्यार्थियों का रक्षाबंधन अवकाश रहेगा।						